2 सितम्बर 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के
ग्रंथाधिराज समयसार पर
प्रवचनों का प्रसारण
अब **अरिहन्त चैनल** पर
अरिहंत प्रतिदिन
प्रातः 6:10 से 6:40 तक

वर्ष : 43, अंक : 11
सितम्बर (प्रथम), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व इस बार ऑनलाइन सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में प्रतिवर्ष बड़ी धूमधाम से मनाया जाता था; परन्तु इस वर्ष लॉकडाउन की परिस्थितियों के कारण सोश्यल डिस्टेंसिंग को ध्यान में रखते हुए पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट सहित अन्य संस्थाओं द्वारा ऑनलाइन ही मनाया गया। दिनांक 23 अगस्त से 1 सितम्बर, 2020 तक आयोजित इस महापर्व के प्रसंग पर देश-विदेश में अपने घरों पर बैठे हुए हजारों साधर्मियों ने बहुत उत्साह धर्मलाभ लिया। प्रतिदिन पूजन-विधान, प्रवचन, संगोष्ठियाँ, जिनेन्द्र भक्ति, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही।

● **जयपुर (राज.) :** यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात:काल आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन, अरिहंत चैनल पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों का प्रसारण एवं दशलक्षण विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा दशलक्षण धर्म विषय पर एवं डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा श्रावकधर्म प्रकाश विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला।

दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र के पाठ के उपरांत डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रतिदिन तत्त्वार्थसूत्र के एक-एक अध्याय पर ऑनलाइन प्रवचन हुए। तत्पश्चात् पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् द्वारा प्रतिदिन तत्त्वार्थसूत्र परिचर्चा (संगोष्ठी) का आयोजन किया गया। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन हुआ तथा प्रतिदिन प्रथम प्रवचन विभिन्न विद्वानों द्वारा एवं द्वितीय प्रवचन पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर द्वारा हुआ।

पूजन-विधान के समस्त कार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा संपन्न कराये गये।

● **कोटा (राज.) :** यहाँ मुमुक्षु आश्रम स्थित श्री 1008 महावीर जिनालय में महापर्व के अवसर पर प्रात:काल दशलक्षण मंडल विधान के उपरांत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा ऑनलाइन प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन, छात्र प्रवचन, पण्डित संजयजी जेवर द्वारा पौराणिक कथावाचन एवं विभिन्न विद्वानों द्वारा व्याख्यानमाला का आयोजन हुआ। सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति व बालकक्षा के पश्चात् पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा के समयसार निर्जरा अधिकार पर प्रवचन हुये।

सभी कार्यक्रमों का प्रसारण यूट्यूब एवं ज़ूम एप के माध्यम से हुआ, जिसका हजारों साधर्मियों ने लाभ लिया।

● **मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मंडल विधान एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन हुए। इसके अतिरिक्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित अरिहंतजी झांझरी उज्जैन, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित विवेकजी छिन्दवाड़ा, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जसवंतनगर, ब्र. कल्पना बेन जयपुर आदि विद्वानों के साथ ही मंगलायतन से श्री पवनजी जैन, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, पण्डित सचिनजी शास्त्री द्वारा ऑनलाइन प्रवचनों का लाभ मिला।

● **चैतन्यधाम-अहमदाबाद (गुज.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन हुआ। तत्पश्चात् गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन एवं पण्डित शैलेषभाई तलोद द्वारा प्रवचन हुये। दोपहर में चैतन्यार्थी छात्रों एवं विशिष्ट विद्वानों द्वारा प्रवचन हुये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत प्रथम प्रवचन पण्डित शैलेषभाई तलोद एवं द्वितीय प्रवचन पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट द्वारा प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

सभी कार्यक्रमों का प्रसारण यूट्यूब एवं ज़ूम एप के माध्यम से हुआ, जिसका हजारों साधर्मियों ने लाभ लिया। ●

④ सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रथम अध्याय (पीठबंध प्ररूपण) का सार –

(गतांक से आगे...)

वक्ताओं के लिये दिशा-निर्देश...

जिनवाणी सुनाने वाले वक्ताओं के लिये पण्डितजी ने अनेक दिशा-निर्देश दिये हैं। वक्ता को जैन श्रद्धान में दृढ होने के साथ-साथ विद्याभ्यास से जिनवाणी पढाने योग्य बुद्धि होनी चाहिये। वक्ता ऐसा हो जो स्वयं सम्यग्ज्ञानी हो और जिसे जिनआज्ञा भंग करने का भय भी बहुत हो।

वक्ता ऐसा होना चाहिये जिसे आजीविका आदि लौकिक कार्य साधने का प्रयोजन न हो, जो निर्लोभी, निरभिमानी और मंदकषायी हो, जो स्वयं ही अनेक प्रश्न उठाकर समाधान करने वाला हो, जिसके वचन मिष्ट हों तथा जो ओरों की शंकाओं का समाधान करने वाला हो।

वक्ता में इतनी सरलता होनी चाहिये कि जिस विषय का उत्तर स्वयं को न आता हो उसके बारे में स्पष्ट कह सके कि मुझे इस संबंध में जानकारी नहीं है। लोक निन्द्य कार्यों में प्रवृत्ति करने वाले, कुलहीन, अंगहीन, स्वरभंग व्यक्तियों को पण्डितजी वक्तापन के अयोग्य बताते हैं। उनका कहना है कि मिष्ट वचन बोलने वाले प्रबुद्ध वक्ता की लोक में मान्यता भी होनी चाहिये।

वक्ताओं में उक्त गुणों की अनिवार्यता के साथ-साथ पण्डितजी लिखते हैं यदि उसे व्याकरण न्यायादिक का तथा बड़े जैन शास्त्रों का विशेष ज्ञान हो तथा यदि अध्यात्म रस का रसिया हो तो वक्तापना विशेष शोभता है।

बुद्धिऋद्धिधारी, अवधिज्ञानी, मन:पर्ययज्ञानी मुनिराज तथा केवलज्ञानी अरहंत भगवान भी जिनशासन के महान वक्ता हैं। यदि ऐसे महान वक्ताओं का योग न मिले तो जिनमें श्रद्धानादि विशेष गुण दिखते हैं, उनसे शास्त्र सुनना चाहिये। सुनने के लोभ से चाहे जिस पापी व्यक्ति से शास्त्र सुनना उचित नहीं है।

ध्यान रहे पण्डितजी ने वक्ताओं के गुणों का परिचय कराकर हमें यह दिशा-निर्देश प्रदान किये हैं कि यदि हम वक्ता हैं तो अपने में उक्त अनिवार्य गुणों का बारीकी से निरीक्षण करें। स्वयं के दोषों को निकालें और ऊपर कहे गये सद्गुणों का अपने में विकास करने का प्रयत्न करें और यदि हम वक्ता नहीं हैं तब भी वक्ता में योग्य गुणों को देखकर ही उससे जिनवाणी का श्रवण करें। (क्रमश:)

ज्ञानपहेली – मोक्षमार्गप्रकाशक-अध्याय 2 का उत्तर

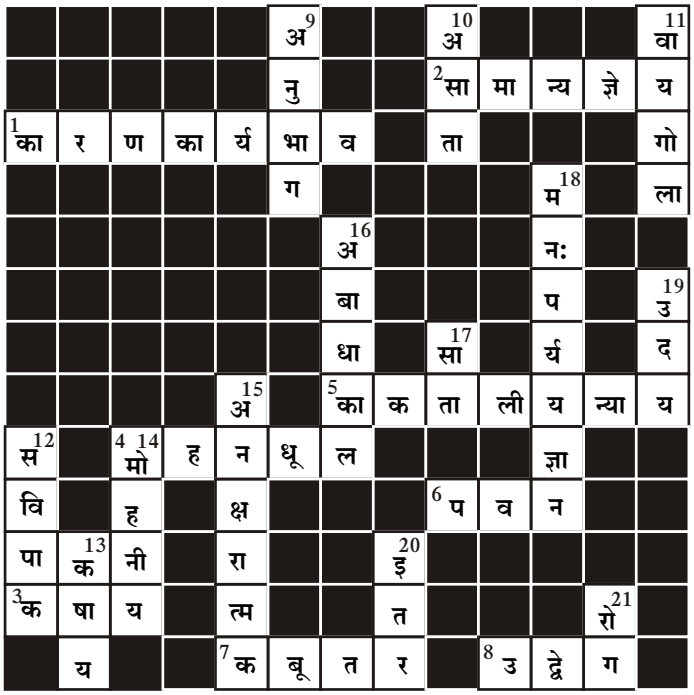

ज्ञानपहेली अध्याय-2 के अन्तर्गत 59 उत्तर प्राप्त हुए हैं, जिनमें से 21 उत्तर सही हैं, उनके नाम निम्नप्रकार हैं –

प्रथम स्थान – 1. मयंक जैन, खण्डवा

द्वितीय स्थान – 2. ज्योति पी. मेहता, अहमदाबाद

तृतीय स्थान – 3. सलोनी जैन, शिवपुरी

सान्त्वना पुरस्कार –

4. केतनाबेन हेतलभाई शाह, सुरेन्द्रनगर (गुज.)
5. ममता जैन, मुम्बई
6. भव्या जैन, दिल्ली
7. शबनम जैन, दिल्ली
8. ओजस टोडरका जैन जयपुर

अन्य सही उत्तर देने वाले – 9. अल्पना जैन भीलवाड़ा, 10. चेतना चिमनलाल शाह सुरेन्द्रनगर (गुज.), 11. हेतलभाई नटवरलाल शाह सुरेन्द्रनगर (गुज.), 12. कुमकुम जैन मेरठ, 13. मानसी जैन दिल्ली, 14. मौलिक जयजीतभाई शाह सुरेन्द्रनगर (गुज.), 15. मीनाक्षी मदनकुमार जैन खण्डवा, 16. प्रशांत सुभाष फुरसुले वर्धा (महा.), 17. रमेशचंद जैन कोटा, 18. रिदम मयंक जैन खण्डवा, 19. समदर्शी जैन जयपुर, 20. सरला बेन जितेन्द्र शाह सुरेन्द्रनगर (गुज.), 21. सुषमा गोयल भोपाल

– आप्त अनुशील जैन, दमोह (संयोजक)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

4 – डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 23 – वाणी तो अचेतन है, उसे नमस्कार क्यों किया?

उत्तर – जीवादि पदार्थों के स्वरूप का ज्ञान कराने में निमित्त होने से सर्वज्ञानुसारिणी वाणी को भी पूज्यपना है, अत: उसे नमस्कार किया है।

प्रश्न 24 – प्रत्यगात्मा किसे कहते हैं?

उत्तर – सर्व परवस्तुओं से भिन्न, नैमित्तिक परभावों से भिन्न व अपने स्वरूप में तन्मय (अपने स्वरूपमय) आत्मा को प्रत्यगात्मा कहते हैं।

प्रश्न 25 – प्रत्यगात्मा और शुद्धात्मा में क्या अन्तर है?

उत्तर – कुछ नहीं, दोनों पर्यायवाची हैं।

प्रश्न 26 – प्रत्यगात्मा की प्रतिपादक किसे कहा गया है?

उत्तर – अनेकान्तमयी सरस्वती की मूर्ति को।

प्रश्न 27 – आशीर्वादरूप जिनवाणी की वंदना में क्या भावना व्यक्त की गई है?

उत्तर – देशनालब्धि का साधन प्रत्यगात्मा का स्वरूप सदा उपलब्ध रहे। जिनवाणी अर्थात् शुद्धात्मा की प्रतिपादक वीतराग वाणी का प्रवाह निरन्तर चलता रहे।

प्रश्न 28 – आचार्य अमृतचन्द्र ने कलश 3 में किन भावों को मलिनता कहा है?

उत्तर – संज्वलन कषाय संबंधी भावों को।

प्रश्न 29 – आत्मख्याति टीका के फलस्वरूप आचार्य अमृतचन्द्र क्या कामना करते हैं?

उत्तर – परमविशुद्धि की।

प्रश्न 30 – तीन कषाय चौकड़ी का अभाव होने से आचार्यदेव की परिणति वर्तमान में कैसी है?

उत्तर – विशुद्ध।

प्रश्न 31 – 'अथ सूत्रावतार:' कहकर आचार्यदेव समयसार के बारे में क्या स्पष्ट करना चाहते हैं?

उत्तर – 'अथ सूत्रावतार:' कहकर आचार्यदेव समयसार के लोक कल्याणकारी स्वरूप को स्पष्ट करना चाहते हैं।

प्रश्न 32 – ध्रुव, अचल और अनुपम गति कौनसी है?

उत्तर – पंचम गति।

प्रश्न 33 – पंचमगति ध्रुव क्यों है?

उत्तर – ध्रुव स्वभाव के अवलम्बन से उत्पन्न हुई होने पंचमगति ध्रुव है। यहाँ पर्याय की ध्रुवता की बात है।

प्रश्न 34 – पंचमगति अचल क्यों है?

उत्तर – अनादिकालीन परिभ्रमण के अभाव होने से पंचमगति अचल है।

प्रश्न 35 – पंचमगति अनुपम क्यों है?

उत्तर – उपमा देने योग्य जगत के सम्पूर्ण पदार्थों से विलक्षण होने एवं अद्भुत महिमा की धारक होने से पंचमगति अनुपम है।

प्रश्न 36 – पंचमगति को अपवर्ग क्यों कहते हैं?

उत्तर – धर्म, अर्थ और काम - इन त्रिवर्ग से भिन्न होने के कारण पंचमगति को अपवर्ग कहते हैं।

प्रश्न 37 – यदि पंचमगति ध्रुव है, तो क्या उसमें परिवर्तन नहीं होता? स्पष्ट करें।

उत्तर – पंचमगति में परिवर्तन होता है, पर वह परिवर्तन सदा एक-सा ही होता है, ध्रुवरूप ही होता है, इसकारण उसे ध्रुव कहा है।

प्रश्न 38 – ध्रुव स्वभाव और ध्रुव पर्याय में क्या अन्तर है?

उत्तर – ध्रुव स्वभाव सदा एकरूप रहता है और ध्रुव पर्याय सदा एकरूप नहीं रहती; किन्तु एक-सी रहती है। स्वभाव की ध्रुवता 'एकरूप' रहना है और पर्याय की ध्रुवता 'एक-सी' रहना है। ध्रुव स्वभाव के अवलम्बन से ध्रुव पर्याय उत्पन्न होती है और ध्रुव स्वभाव तो सदा विद्यमान रहता है।

प्रश्न 39 – ध्रुव स्वभाव के अवलम्बन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – त्रिकाली ध्रुव ज्ञानानन्द स्वभावी निज भगवान आत्मा को अनुभूतिपूर्वक जानना, निज जानना और उसमें ही अपनापन स्थापित होना, उसका ही ध्यान करना, उसमें ही लीन हो जाना ही ध्रुव स्वभाव का आश्रय है, अवलम्बन है।

प्रश्न 40 – ध्रुव अचल और अनुपम - इन तीन विशेषणों द्वारा आचार्यदेव क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर – आचार्यदेव उक्त विशेषणों में से ध्रुव विशेषण से विनाशीकपने का, अचल विशेषण से परिभ्रमण का और अनुपम विशेषण से चारों गतियों में पायी जाने वाली कथंचित समानता का निषेध पंचमगति में करना चाहते हैं।

प्रश्न 41 – भावस्तुति और द्रव्यस्तुति से क्या तात्पर्य है? अथवा दोनों में क्या अन्तर है?

उत्तर – प्रत्येक अन्तर्मुहूर्त में आत्मा का अनुभव करना, शुद्धोपयोग में जाना ही भावस्तुति है और गाथा में शब्दों से नमस्कार करना द्रव्यस्तुति है।

प्रश्न 42 – समय किसे कहते हैं? वह कितने प्रकार का होता है?

उत्तर – जो अपने गुण पर्यायों को प्राप्त हो, उसे समय कहते हैं। इस व्याख्या के अनुसार 'समय' शब्द में छहों द्रव्य समा जाते हैं। जो एक ही समय में गमन भी करे और ज्ञान भी करे उसे समय कहते हैं। इस व्याख्या के अनुसार समय शब्द का अर्थ मात्र जीव होता है। यह जीव नामक समय दो प्रकार का होता है – (1) स्वसमय और (2) परसमय

प्रश्न 43 – स्वसमय और परसमय दोनों अवस्थाओं में व्यापक प्रत्यगात्मा को क्या कहते हैं?

उत्तर – समय

प्रश्न 44 – स्वभाव में (दर्शन–ज्ञान) स्थित जीव को क्या कहते हैं?

उत्तर – स्वसमय

प्रश्न 45 – परभाव (मोह, राग, द्वेषभाव) में स्थित जीव को क्या कहते हैं?

उत्तर – परसमय

प्रश्न 46 – आचार्य अमृतचन्द्र ने गाथा–2 में जीव नामक समय का स्वरूप कितने विशेषणों के माध्यम से स्पष्ट किया है अथवा समझाया है?

उत्तर – आचार्य अमृतचन्द्र ने उक्त गाथा में समय का स्वरूप सात विशेषणों से स्पष्ट किया है। वह समय नामक जीव पदार्थ –

(1) उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य युक्त सत्ता सहित है।

(2) ज्ञान–दर्शनरूप चैतन्य स्वभावी है।

(3) अपने असाधारण चैतन्य स्वभाव के सद्भाव एवं परद्रव्यों के विशेष गुणों के अभाव के कारण परद्रव्यों से भिन्न है।

(4) परद्रव्यों से एक क्षेत्रावगाहरूप से मिला होने पर भी अपने स्वरूप से च्युत नहीं होने के कारण टंकोत्कीर्ण चित्स्वभावी है।

(5) अनन्त धर्मात्मक एक अखण्ड द्रव्य है।

(6) अक्रमवर्ती गुणों और क्रमवर्ती पर्यायों से युक्त है।

(7) स्व–पर प्रकाशक सामर्थ्य से युक्त होने से अनेकाकार होने पर भी एकरूप है।

इसप्रकार समय शब्द को (1) उत्पाद–व्यय–ध्रौव्य से सहित (2) ज्ञान–दर्शनस्वभावी (3) परद्रव्यों और उनकी पर्यायों से अत्यन्त भिन्न (4) टंकोत्कीर्ण चैतन्यस्वभावी (5) अनन्तधर्मात्मक (6) गुणपर्यायवान और (7) स्व–पर प्रकाशक – इन सात विशेषणों से समझाया है।

प्रश्न 47 – जीव के इन सात विशेषणों को आचार्य अमृतचन्द्र ने अपने मंगलाचरण के कलशों में किस रूप में प्रस्तुत किया है अथवा कैसे समाहित किया है?

उत्तर – (1) भावाय (2–4) चित्स्वभावाय (5) अनन्तधर्मण: तत्त्वं (6) सर्वभावान्तरच्छिदे (7) स्वानुभूत्या चकासते – इसप्रकार सात विशेषणों को कलश नं. 2 में 5 विशेषणों में समाहित किया है।

प्रश्न 48 – स्वसमय और परसमय – ये दो भेद समयसार के भी हो सकते हैं क्या? यदि नहीं तो क्यों?

उत्तर – स्वसमय और परसमय – ये दो भेद समयसार के नहीं हो सकते; क्योंकि गुणपर्यायवान जीवद्रव्य ही स्वसमय और परसमय में विभक्त होता है, समयसाररूपी शुद्धात्मा तो अविभक्त है, उसके तो कोई भेद होते ही नहीं है। अथवा

स्वसमय और परसमय के भेद पर्याय की ओर से किये गये भेद ही हैं। अत: ये भेद पर्याय सहित आत्मा के ही हो सकते हैं, जबकि समयसाररूप शुद्धात्मा तो अविभक्त है, उसमें कोई भेद होते ही नहीं।

प्रश्न 49 – समयसार में किस भावरूप परिणत आत्मा को धर्मात्मा कहा गया है?

उत्तर – स्वसमयरूप परिणत आत्मा को धर्मात्मा (सम्यग्दृष्टि) कहा है।

प्रश्न 50 – समयसार में किस भावरूप परिणत आत्मा को अधर्मात्मा कहा गया है?

उत्तर – परसमयरूप (मोह–राग–द्वेषरूप) परिणत आत्मा को अधर्मात्मा कहा है।

प्रश्न 51 – समय स्वसमय कैसे बनता है?

उत्तर – समयसाररूप शुद्धात्मा के ज्ञान, श्रद्धान और ध्यान से समय स्वसमय बनता है।

प्रश्न 52 – समय परसमय कैसे बनता है?

उत्तर – समयसाररूप शुद्धात्मा के ज्ञान, श्रद्धान और ध्यान के अभाव में मोह–राग–द्वेषरूप परिणत होकर आत्मा परसमय बनता है।

प्रश्न 53 – समय, स्वसमय, परसमय और समयसार में हेय, उपादेय, ज्ञेय और ध्येय बताइये?

उत्तर – समय–ज्ञेय, स्वसमय–उपादेय, परसमय–हेय और समयसार–ध्येय है।

(क्रमश:)

आवश्यक सूचना

पण्डित टोडरमल स्मारक से प्रकाशित जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) एवं वीतराग–विज्ञान (मासिक) पत्रिकाएं ईमेल या मोबाइल पर मंगाने हेतु –

सम्पर्क करें – **9660668506 (पीयूष कुमार जैन)**

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ

7

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

स्वघर और परघर, स्वस्त्री और परस्त्री का भेद मात्र लौकिक ही नहीं है; अपितु इसका धार्मिक आधार भी है, नैतिक आधार भी है। अत: धार्मिक और नैतिक जीवन के लिए परपदार्थों में भी अपने-पराये का भेद डालनेवाले इन नयों को स्वीकार करना न्यायसंगत है, आगमसम्मत है।

बिना नैतिक और धार्मिक जीवन के आध्यात्मिक साधना संभव नहीं है, यही कारण है कि आध्यात्मिक नयों में असद्भूतव्यवहारनय को भी स्थान प्राप्त है।[१]''

१. जो नय प्रयोजनवश अपने से भिन्न इन स्त्री-पुत्रादि से उक्त प्रकार के संबंध को स्वीकार करता है, वह **उपचरित असद्भूत व्यवहारनय है।**

स्त्री-पुत्रादि दूर के संबंधी होने से उपचरित, वास्तविक संबंधी नहीं होने से असद्भूत, अपने कहे जाने से व्यवहार और सम्यग्ज्ञान के अंश होने से नय कहलाते हैं।

इसप्रकार इसके नामकरण में प्रत्येक पद सार्थक है।

२. शरीर से उक्त प्रकार के संबंध स्वीकार करता है, वह **अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनय है।**

इसमें भी शरीर निकट का संबंधी होने से अनुपचरित, वास्तविक संबंधी नहीं होने से असद्भूत, संबंधी कहा जाने से व्यवहार और सम्यग्ज्ञान का अंश होने से नय कहलाता है।

बाह्य संयोगों में एकत्व-ममत्व, कर्तृत्व-भोक्तृत्व **उपचरित असद्भूत व्यवहारनय** है और शरीर में एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व **अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनय है।**

उक्त दोनों नयों का निषेध करते हुये निश्चयनय कहता है कि ये संयोग और संयोगीभाव मैं नहीं, मेरे नहीं; इनका कर्त्ता-भोक्ता भी मैं नहीं। निश्चयनय की यह बात ज्ञानानन्दस्वभावी इस गीत में समझाई गई है।

उपचरित और अनुपचरित - उक्त दोनों नय असद्भूत व्यवहारनय के भेद हैं।

दूर के संबंधी होने से **उपचरित और निकट संबंधी अनुपचरित कहलाते हैं।** स्त्री-पुत्रादि दूर के संबंधी हैं और शरीर निकट का संबंधी - इसलिए स्त्री-पुत्रादि को अपना कहने वाले नय को **उपचरित** और शरीर को अपना कहने वाले नय को **अनुपचरित** कहते हैं।

स्त्री-पुत्रादि का वियोग इसी जन्म में कभी भी हो जाता है; इसलिये उनके साथ का संबंध दूर का है, अतः **उपचरित** है। देह का संबंध जीवन पर्यन्त रहता है; अतः निकट का है; इसलिये **अनुपचरित** है।

ये दोनों नय असद्भूत व्यवहारनय हैं; क्योंकि शरीर और स्त्री-पुत्रादि वास्तव में अपने हैं नहीं, इनका स्वामी भी मैं नहीं हूँ, इनका कर्त्ता-भोक्ता भी मैं नहीं हूँ, अतः इनसे संबंध बताने वाला नय **असद्भूत कहलाता है।**

इसप्रकार उक्त छन्द में इस असद्भूत व्यवहारनय के विषयों का निषेध कर दिया गया है।

कहा गया है कि न तो मैं शरीर रूप हूँ और न मैं स्त्री-पुत्रादि रूप ही हूँ। मैं न इनका स्वामी हूँ और मैं न इनका कर्त्ता-भोक्ता ही हूँ। इन संयोगों से मेरा कोई संबंध नहीं है। इनसे एकत्व-ममत्व और कर्तृत्व-भोक्तृत्व मानना अज्ञान है, मिथ्यात्व है।

निश्चयनय से तो स्त्री-पुत्रादि व शरीरादि अपने हैं नहीं; पर व्यवहारनय से अपेक्षानुसार उन्हें प्रयोजन की सिद्धि के लिये जिनवाणी में कथंचित् सत्यार्थ भी कहा गया है।

स्त्री-पुत्रादि और शरीर को अपना कहने वाले नय को जब सर्वथा असत्यार्थ कहा गया तो यह प्रश्न खड़ा होगा कि इनके आधार पर चलने वाले व्यवहार का काम आप कैसे चलायेंगे? तो पाण्डे राजमलजी को यही कहना पड़ा कि हम व्यवहाराभास से काम चला लेंगे।

जब व्यवहाराभास के बिना काम नहीं चलता तो फिर उन्हें कथंचित् असद्भूत व्यवहारनय मानने में कोई हानि नहीं है।

यह आत्मगीत तो निश्चयनय का गीत है, इसमें तो परमशुद्धनिश्चयनय के विषयभूत आत्मा की चर्चा की गई है; अतः यहाँ तो एकमात्र परमार्थ की बात है। परम+अर्थ = परमार्थ। उत्कृष्ट आत्मतत्त्व की साधना-आराधना ही

१. परमभावप्रकाशक नयचक्र, पृष्ठ-१४८-१४९

परमार्थ है। अतः यहाँ तो सभी प्रकार का व्यवहार अभूतार्थ है, असत्यार्थ है। एकमात्र परमशुद्धनिश्चयनय ही भूतार्थ है, सत्यार्थ है, परमार्थ है।

निश्चय-व्यवहारनयों की अपेक्षा इस गीत में परमशुद्धनिश्चयनय एवं द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिकनयों की अपेक्षा परमभावग्राही शुद्ध द्रव्यार्थिकनय का कथन है। इस गीत का भाव समझने के लिये उक्त नयों का स्वरूप जानना आवश्यक है।

चार प्रकार के व्यवहारनयों में अभी दो प्रकार के असद्भूत व्यवहारनयों की चर्चा हुई है। सद्भूत व्यवहारनयों की चर्चा शेष है।

सद्भूतव्यवहारनय भी उपचरित और अनुपचरित के भेद से दो प्रकार का होता है।

उपचरितसद्भूत व्यवहारनय को अशुद्धसद्भूत व्यवहारनय और अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय को शुद्ध सद्भूतव्यवहारनय भी कहते हैं।

रंग, राग और भेद से भिन्न संबंधी प्रकरण में **रंग** पद से वाच्य सभी संयोग असद्भूतव्यवहारनय में आते हैं और मोह-राग-द्वेषरूप संयोगी भाव (विकारीभाव) उपचरित सद्भूत व्यवहारनय में आते हैं। तात्पर्य यह है कि राग-द्वेष भावों को आत्मा कहना, आत्मा का कहना, आत्मा को उनका कर्त्ता-भोक्ता कहना उपचरित सद्भूतव्यवहारनय का कथन है।

सम्यग्दर्शन आदि निर्मल परिणमन एवं गुणभेद, प्रदेशभेद आदि अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय में आते हैं। इन्हें आत्मा कहना, आत्मा का कहना, आत्मा को उनका कर्त्ता-भोक्ता कहना अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय है।

आत्मा के विकारी परिणमन का ज्ञान कराने में उपचरित सद्भूत व्यवहारनय काम आता है और आत्मा के वैभव का परिचय अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय कराता है।

अतः ये नय भी उपयोगी नय हैं; क्योंकि अपने विकारों को जाने बिना उन्हें त्यागेंगे कैसे? और गुणों को पहिचाने बिना उनमें उपादेय बुद्धि कैसे होगी?

पण्डित दौलतरामजी छहढाला में कहते हैं -

''बिन जाने तैं दोष-गुणनि को कैसे तजिये गहिये''

निश्चयनय, रागादि में अपनापन बताने वाले उपचरित सद्भूत व्यवहारनय का और भेद का उद्पादक होने अनुपचरित सद्भूतव्यवहारनय का भी निषेध कर देता है। उक्त छन्द में **राग और भेद से भिन्न** पद का प्रयोग इन्हीं नयों के निषेध के लिये किया गया है।

चार प्रकार के निश्चय और दस प्रकार के द्रव्यार्थिकनयों की चर्चा चौथे छन्द में **शुद्ध-बुद्ध** पद का अर्थ करते समय करेंगे। **(क्रमशः)**

जिनशासन प्रभावना ई-शिविर संपन्न

खनियांधाना (म. प्र.) : यहाँ श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन नया मंदिर ट्रस्ट के अन्तर्गत संचालित श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान नंदीश्वर दिगम्बर जैन विद्यापीठ चेतनबाग के तत्त्वावधान में सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट जयपुर के सहयोग से दिनांक 14 से 16 अगस्त तक जिनशासन प्रभावना ई-शिविर एवं विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन् अमायन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर, पण्डित रतनचंदजी भोपाल, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर, ब्र. निखिलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित संजयजी शास्त्री साव खनियांधाना, पण्डित चर्चितजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना, डॉ. ममताजी उदयपुर, डॉ. आरती दीदी छिन्दवाड़ा, ब्र. प्रीति दीदी खनियांधाना, ब्र. सहजता दीदी सिंगोड़ी, ब्र. प्रियंका दीदी खनियांधाना आदि अनेक विद्वानों का प्रवचनों व गोष्ठियों के माध्यम से लाभ प्राप्त हुआ। रात्रिकालीन कार्यक्रमों में जैन स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय देते हुए उनका सहयोग व सहभागिता को प्रदर्शित किया गया।

शिविर में मुख्य अतिथि श्री आई.एस. जैन मुम्बई, विशिष्ट अतिथि श्री अशोकभाई शाह मुम्बई थे। कार्यक्रम का मंगलाचरण स्मृति-नीलेश शाह ऑस्ट्रेलिया एवं स्वागत गीत कु. एनी जैन जयपुर ने किया। शिविर आमंत्रणकर्ता श्रीमती कुसुम-प्रदीपजी चौधरी परिवार किशनगढ, ध्वजारोहणकर्ता श्री ब्रजलालजी हथाया परिवार मुम्बई एवं मण्डप उद्घाटनकर्ता श्री महेन्द्रजी राहुलजी गंगवाल परिवार जयपुर थे।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित दीपकजी शास्त्री ध्रुव एवं पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा किया गया।

शिविर के निर्देशक पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर रहे। मीडिया प्रभारी के रूप में श्री दीपकराज छिन्दवाड़ा, श्री सचिन मोदी खनियांधाना, श्री प्रद्युम्न फौजदार बड़ामलहरा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की –

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में साप्ताहिक गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 16 अगस्त को '**दंसण मूलो धम्मो**' विषय पर चतुर्थ गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित संतोषजी शास्त्री कटनी ने की।

इस अवसर पर सम्यक्त्व की पूर्व भूमिका विषय पर आर्जव जैन विदिशा (शास्त्री प्रथम वर्ष), सम्यक्त्वोत्पत्ति के कारण विषय पर सोहम शाह (शास्त्री प्रथम वर्ष), सम्यक्त्व का स्वरूप विषय पर अभिषेक जैन देवराह (शास्त्री द्वितीय वर्ष), सम्यक्त्व के भेद-प्रभेद विषय पर मधुर जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष), सम्यक्त्व का माहात्म्य विषय पर शुभांशु जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष), सम्यक्त्व और आत्मानुभूति विषय पर अशोक कुमार (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से ध्रुव जैन ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से आयुष जैन मड़देवरा ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ ने की।

इस अवसर पर सम्यक्त्व के विभिन्न लक्षणों का समन्वय विषय पर सक्षम जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष), सम्यक्त्व के लक्षण में दोषकल्पना निराकरण विषय पर चेतन जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष), सम्यक्त्व : अनुयोगों के परिप्रेक्ष्य में विषय पर पारस जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष), सर्व गुणांश ते समकित विषय पर संयम जैन दिल्ली (शास्त्री द्वितीय वर्ष), सम्यग्दृष्टि की अन्तर्बाह्य दशा विषय पर प्रियांश जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष), सम्यक्त्व की परीक्षा कैसे? विषय पर शिवराज स्वामी (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने अपने मनोभाव व्यक्त किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से अक्षय जैन फुटेरा ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से आकाश जैन हीरापुर ने किया।

● दिनांक 21 अगस्त को '**स्थापय् दशधा धर्मम्, उत्तमं जिनभाषितम्**' विषय पर पंचम गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन ने की।

इस अवसर पर दिव्यांश जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने दशलक्षण पर्व का सामान्य स्वरूप, आर्जव माद्रप (उपाध्याय कनिष्ठ) ने कषाय चतुष्क के अभावरूप धर्म चतुष्टय, कृणाल शाह (उपाध्याय कनिष्ठ) ने सत्य और उसका संरक्षक संयम, मुक्तेश जैन अशोक नगर (उपाध्याय वरिष्ठ) ने आत्म-स्थिरतावर्धक : तप और त्याग, अविरल जैन लूणदा (उपाध्याय वरिष्ठ) ने आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दस सार हैं, नेत्रेश सातपुते कारंजा (उपाध्याय वरिष्ठ) ने धर्मों के क्रम का औचित्य विषय पर अपने विचार व्यक्त किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से गौतम जैन ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से अचिंत्य जैन बण्डा ने किया।

दिनांक 22 अगस्त को पंचम गोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जसवंतनगर ने की।

इस अवसर पर अमन जैन ग्वालियर (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने दशलक्षण पर्व की ऐतिहासिकता, सोमिल जैन खनियांधाना (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने जैनेतर साहित्य के परिप्रेक्ष्य में दशधर्म, पीयूष जैन जयपुर (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने विभिन्न कवियों की दृष्टि में दशधर्म, दर्शन सिंघई (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने दशधर्म संबंधी भ्रांतियाँ व निराकरण, शुभम जैन गढाकोटा (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने क्षमावाणी का इतिहास व माहात्म्य, अक्षय जैन दलपतपुर (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने दशधर्मों की सार्थकता एवं हमारा कर्तव्य विषय पर अपने मनोगत व्यक्त किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से शाश्वत जैन ग्वालियर ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से अक्षत जैन विदिशा ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री एवं गौरवजी उखलकर ने किया।

दशलक्षण पर्व की पूर्व संध्या पर –

तत्त्वार्थसूत्र पर ऑनलाइन परिचर्चा

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 22 अगस्त को सायंकाल तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ पर ऑनलाइन परिचर्चा की गई।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर एवं मुख्य अतिथि श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल जयपुर थे।

इस अवसर पर ग्रंथ एवं ग्रंथकार विषय पर नमन जैन हटा (शास्त्री प्रथम वर्ष), तत्त्वार्थसूत्र के मंगलाचरण का वैशिष्ट्य विषय पर दीपक जैन मझगुवां (शास्त्री प्रथम वर्ष), तत्त्वार्थसूत्र का भाषा वैशिष्ट्य विषय पर दिव्यांश जैन अलवर (शास्त्री द्वितीय वर्ष), तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ की विविध टीकाएं विषय पर संयम जैन खनियांधाना (शास्त्री द्वितीय वर्ष), तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ पर पूर्ववर्ती आचार्यों का प्रभाव विषय पर संयम जैन दिल्ली (शास्त्री तृतीय वर्ष), तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ का दृष्टांत वैभव विषय पर आप्त अनुशील जैन दमोह (शास्त्री तृतीय वर्ष), तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ में चार अनुयोग एवं न्याय विषय पर पवित्र जैन आगरा (शास्त्री तृतीय वर्ष), सर्वमान्य ग्रंथ तत्त्वार्थसूत्र विषय पर अमन जैन आरोन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

परिचर्चा का मंगलाचरण संदेश जैन दिल्ली (शास्त्री प्रथम वर्ष), संयोजन अखिल जैन मण्डीदीप (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं संचालन संभव जैन दिल्ली (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

शोक समाचार

बारां (राज.) निवासी श्री पदमकुमारजी जैन का दिनांक 23 अगस्त को 74 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप जयपुर शिविर में नियमितरूप से आकर तत्त्वज्ञान का लाभ लेते थे। आपकी स्मृति में निर्मलादेवी जैन, बारां (राज.) की ओर से 5100/- रुपये ज्ञानप्रचार (कार्तिकेयानुप्रेक्षा) हेतु प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

2 सितम्बर 2020, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का परिचय सम्मेलन-

नवपल्लव कार्यक्रम सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 20 व 21 अगस्त को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के सत्र 2020-21 का परिचय सम्मेलन 'नवपल्लव' के रूप में हर्षोल्लास के साथ ऑनलाइन मनाया गया।

यह कार्यक्रम तीन सत्रों में संपन्न हुआ, जिसके अन्तर्गत प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल जयपुर, द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर एवं तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर उपस्थित थे। अन्य अतिथियों में ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, श्री कृष्णदेवजी शुक्ल जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, डॉ. प्रमोदजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर, पण्डित गौरवजी उखलकर जयपुर, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर, श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल जयपुर, विदुषी प्रतीति मोदी नागपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर उपाध्याय कनिष्ठ में नवागंतुक 44 छात्रों ने यहां आकर तत्त्वप्रचार करने की भावना व्यक्त करते हुए अपना परिचय दिया। साथ ही उपाध्याय कनिष्ठ से निश्चल जैन दिल्ली, गौतम गणधर केरबना, शाश्वत जैन ग्वालियर, हर्ष जैन फुटेरा; उपाध्याय वरिष्ठ से अमन जैन अलवर, हर्षिल जैन सागर, शाश्वत जैन सागर, मयंक जैन फुटेरा; शास्त्री प्रथम वर्ष से सक्षम जैन ललितपुर, आर्जव जैन विदिशा, वैभव जैन सागर; शास्त्री द्वितीय वर्ष से समकित जैन ईसागढ़, सुष्मित जैन सेमारी, ज्ञायक जैन सागर, भव्या जैन दिल्ली; शास्त्री तृतीय वर्ष से अतिशय जैन चौरई, शुभांशु जैन जबलपुर, प्रतीक जैन रिसोड़, संभव जैन दिल्ली ने अपनी कक्षा का परिचय कराते हुए उनकी उपलब्धियों से भी सभी को परिचित कराया।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में छात्रों से कहा कि आप विश्व की सर्वश्रेष्ठ विद्या को सीख रहे हैं, जो जन्म-मरण के दु:खों का, मोह-राग-द्वेष रूप अनंत आकुलता का अभाव कर अनंत सुख प्रदान करती है। बड़ा विद्वान स्वर्ग से उतरकर नहीं आता; अपितु हममें से जो कोई मेहनतकर शास्त्रों के मर्म को समझेगा, वही बड़ा विद्वान बनेगा। साथ ही सोनगढ, अमायन आदि अनेक विद्यालयों के छात्रों द्वारा यहाँ प्रवेश लेने पर उनके ट्रस्टियों एवं अधिकारियों की प्रशंसा करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

इसके अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने भी छात्रों को उद्बोधन दिया।

इस अवसर पर ज्ञाता कक्षा (शास्त्री प्रथम वर्ष) द्वारा निर्मित पत्रिका '**संगठन एक महाशक्ति**' का उद्घाटन डॉ. भारिल्ल के करकमलों से हुआ। साथ ही ज्ञाता कक्षा एवं स्वर्णिम कक्षा (शास्त्री तृतीय वर्ष) द्वारा निर्मित वीडियो का भी प्रसारण किया गया।

कार्यक्रम में प्रथम सत्र का संचालन अंकुर जैन खड़ैरी (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने, द्वितीय सत्र का संचालन अर्पित जैन भगवां (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने और तृतीय सत्र का संचालन पल त्रिवेदी गांधी नगर (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। मंगलाचरण निष्कर्ष जैन नौगाँव (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

श्वेताम्बर पर्यूषण में ऑनलाइन प्रवचन

श्वेताम्बर पर्यूषण के अवसर पर जैन अध्यात्म स्टडी सर्किल फैडरेशन द्वारा आयोजित 39वीं वार्षिक व्याख्यानमाला (अल्केश दिनेश मोदी मेमोरियल व्याख्यानमाला) के अन्तर्गत दिनांक 15 से 22 अगस्त तक प्रतिदिन प्रात: डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर के प्रवचन हुए, जिसका देश-विदेश में हजारों लोगों ने यूट्यूब एवं ज़ूम एप के माध्यम से लाभ लिया।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 28 अगस्त 2020

प्रति,